मेरे बचपन के दिन (महादेवी वर्मा)

पाठ का परिचय

महादेवी वर्मा का पद्य जितना उच्चकोटि का है, उनका गद्य भी उतना ही उच्चकोटि का है। उनकी विशिष्ट भाषा-शैली उनके गद्य को स्पष्टतः अन्यों से पृथक् करती है। प्रस्तुत पाठ **'मेरे बचपन के दिन'** उनकी संस्मरण विधा की रचना है। इसमें उन्होंने अपने बचपन की स्मृतियों को सँजोने के साथ-साथ तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति का भी संकेत किया है। इस पाठ में उन्होंने अपने विद्यालयीय जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। लड़कियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, विद्यालय की सहपाठिनों, छात्रावास के जीवन और स्वतंत्रता-आंदोलन के प्रसंगों का सुंदर वर्णन इसमें किया गया है। सुभद्राकुमारी चौहान की आत्मीयता को महादेवी वर्मा ने विशेष रूप से व्यक्त किया है।

पाठ का सारांश

'मेरे बचपन के दिन' महादेवी वर्मा द्वारा रचित एक भावपूर्ण संस्मरण है। इसमें उन्होंने अपनी बाल्यावस्था से जुड़ी कई यादें प्रस्तुत की हैं।

जन्म और शिक्षा–महादेवी वर्मा के परिवार में कई पीढ़ियों के बाद कन्या के रूप में उनका जन्म हुआ। लगभग 200 वर्ष तक उनके परिवार में कोई लड़की थी ही नहीं; क्योंकि उनसे पहले तो जन्म लेते ही कन्या को परमधाम पहुँचा दिया जाता था। दो-सौ वर्षों बाद महादेवी वर्मा के बाबा ने निरंतर दुर्गा-पूजा करके कन्या का वरदान माँगा। अन्य कन्याओं की भाँति महादेवी वर्मा को जन्म के बाद कोई कष्ट नहीं भोगना पड़ा। उनके बाबा उन्हें विदुषी बनाना चाहते थे। माता-पिता ने भी उनका खूब ध्यान रखा। यद्यपि उन्हें उर्दू, फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी पढ़ने की भी पूर्ण सुविधा दी गई, परंतु उनकी सर्वाधिक रुचि हिंदी और संस्कृत पढ़ने में ही रही।

महादेवी वर्मा ने 'पंचतंत्र' और संस्कृत भाषा माता की प्रेरणा से पढ़ी, परंतु उर्दू तथा फ़ारसी में उनका मन ज़रा भी नहीं रमा। मिशन स्कूल में होने वाली प्रार्थना एवं वहाँ का वातावरण भी उन्हें अच्छा नहीं लगा। जब उन्हें 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज़, इलाहाबाद' में भर्ती किया गया, तब वे पाँचवीं कक्षा में थीं। वहाँ हिंदू एवं ईसाई दोनों ही जातियों की छात्राएँ थीं। छात्रावास में भोजन में प्याज़ तक नहीं पड़ता था।

सुभद्राकुमारी चौहान से मित्रता–महादेवी वर्मा के कमरे में उनके साथ उनकी सीनियर छात्रा सुभद्राकुमारी चौहान रहती थीं। वे बड़ी सुंदर कविताएँ लिखती थीं और प्रतिष्ठित थीं। महादेवी वर्मा की माता भी गीत आदि लिखा करती थीं। महादेवी वर्मा भी अपनी माता की देखा-देखी भक्ति-गीत लिखा और गाया करती थीं। सुभद्राकुमारी चौहान खड़ीबोली हिंदी में गीत व कविता लिखती थीं। महादेवी वर्मा भी उन्हीं की देखा-देखी तुकबंदी करने लगीं। सुभद्रा जी को महादेवी वर्मा के इस प्रकार से गुपचुप कविता लिखने की भनक लग गई। उन्होंने उनकी सारी कापियाँ छान मारीं और कविताएँ ढूँढ़-ढूँढ़कर निकाल लीं। फिर पूरे छात्रावास में सबको महादेवी वर्मा का परिचय कराती फिरीं कि यह कविता लिखती है। तब से दोनों में गहरी मित्रता हो गई। खेल-कूद के समय में वे दोनों तुकबंदी करतीं और सौभाग्य से वे तुकबंदियाँ 'स्त्री-दर्पण' नामक पत्रिका में छप भी जाती थीं।

कवि-सम्मेलनों में भाग लेना–उन दिनों हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कवि-सम्मेलन होने लगे थे। महादेवी वर्मा इनमें जाने लगीं। क्रास्थवेट की एक मैडम उन्हें साथ लेकर जातीं। कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष हरिऔध, श्रीधर पाठक, रत्नाकर जी जैसे राष्ट्रीय स्तर के महान कवि हुआ करते थे। महादेवी वर्मा काव्य-पाठ के अवसर के लिए बेचैन रहती थीं। काव्य-पाठ पर उन्हें प्रायः प्रथम पुरस्कार मिला करता था।

गांधी जी से भेंट–एक कवि-सम्मेलन में महादेवी वर्मा को पुरस्कार में चाँदी का कटोरा मिला। उन्हीं दिनों गांधी जी (बापू) आनंद भवन आए। आनंद भवन तब स्वतंत्रता-आंदोलन का केंद्र बन चुका था। महादेवी वर्मा और छात्रावास की अन्य छात्राएँ बचत करके कुछ-न-कुछ राशि गांधी जी को देशहित में अर्पित

करती थीं। महादेवी ने गांधी जी को अपना कटोरा दिखाया। गांधी जी ने उनकी कविता के विषय में तो कोई रुचि न दिखाई, परंतु भेंट मानकर कटोरा अपने पास रख लिया। फिर भी महादेवी वर्मा को प्रसन्नता हुई कि वह कटोरा देशहित के लिए भेंट हुआ।

छात्रावास का भेदभावरहित वातावरण–छात्रावास से सुभद्राकुमारी चौहान के चले जाने के बाद महादेवी वर्मा के कमरे में ज़ेबुन्निसा नाम की एक मराठी मुस्लिम लड़की आकर रही। वह महादेवी वर्मा के बहुत-से काम कर दिया करती थी। वह मराठी-मिश्रित हिंदी बोलती थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं–ज़ीनत बेगम। उन्हें उसका वह मराठी-मिश्रण पसंद नहीं था, परंतु ज़ेबुन कहती थी–"**हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!**" छात्रावास में सांप्रदायिकता का नामो-निशान नहीं था। अवध की लड़कियाँ अवधी बोलती थीं और बुंदेलखंड की लड़कियाँ बुंदेली। सब एक मेस में खाते और एक प्रार्थना करते, कहीं कोई विवाद नहीं था।

बेगम साहिबा की आत्मीयता–बचपन में महादेवी वर्मा का परिवार जिस कंपाउंड में रहा करता था, वहाँ जवारा के नवाब भी रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी; अतः वे एक बंगले में रहते थे। उनकी बेगम साहिबा सपरिवार महादेवी वर्मा के परिवार से आत्मीयतापूर्ण संबंध बनाने में बहुत रुचि रखती थीं। बेगम साहिबा आग्रह करतीं कि महादेवी व उनके भाई-बहन उन्हें ताई कहें और अपने बच्चों से महादेवी वर्मा की माँ को 'बड़ी जान' कहलवातीं। बच्चों के जन्मदिन वे एक-दूसरे के घर मिलकर मनातीं। राखी पर बेगम साहिबा अपने बेटे को तब तक पानी न पीने देतीं, जब तक कि महादेवी वर्मा उसे राखी न बाँध देतीं। मुहर्रम पर अपने साथ-साथ महादेवी वर्मा के परिवार के लिए भी वे हरे वस्त्र बनवाती थीं।

महादेवी वर्मा के भाई का नामकरण–महादेवी वर्मा के छोटे भाई के जन्म पर ताई साहिबा ने न केवल 'नेग' लिया, वरन् नवजात को वस्त्रादि भी भेंट किए और छह महीने तक उसके लिए वस्त्र भी भेजे। उसका नाम 'मनमोहन' बेगम साहिबा ने ही रखा था। यही मनमोहन बाद में प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा के नाम से गोरखपुर और जम्मू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर बने।

काश! वह सपना सच होता–बेगम साहिबा के यहाँ उर्दू, अवधी, हिंदी तीनों भाषाएँ बोली जाती थीं। उस समय वातावरण में एक निकटता थी, सांप्रदायिक सद्भाव था। वह आपसी निकटता अब नहीं रही। यदि यही निकटता की भावना आगे भी बनी रहती तो भारत का वर्तमान कुछ और ही होता।

भाग-1

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा, जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरी माता जबलपुर से आईं, तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

1. लेखिका के परिवार में कितने वर्षों तक कोई लड़की उत्पन्न नहीं हुई थी–

(क) सौ वर्ष तक (ख) दो सौ वर्ष तक
(ग) तीन सौ वर्ष तक (घ) पचास वर्ष तक।

2. लेखिका के जन्म से पहले लड़कियों की क्या दशा थी–

(क) उनके जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती थी
(ख) उनका पालन-पोषण अच्छी प्रकार किया जाता था
(ग) उनको पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. लेखिका के बाबा ने किस देवी की पूजा की थी–

(क) दुर्गा की (ख) लक्ष्मी की
(ग) सरस्वती की (घ) गौरी की।

4. लेखिका के परिवार में भाषा की दृष्टि से कैसा वातावरण था–

(क) लेखिका के बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे
(ख) उनके पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी
(ग) उनके घर में हिंदी का वातावरण नहीं था
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. लेखिका की माँ के विषय में सत्य नहीं है–

(क) वे जबलपुर से आई थीं
(ख) वे अपने साथ हिंदी लाई थीं
(ग) वे पूजा-पाठ नहीं करती थीं
(घ) वे पूजा-पाठ भी करती थीं।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(2) हिंदी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिंदी का भी प्रचार चलता था। कवि-सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको-साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिऔध जी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

1. गद्यांश के अनुसार उस समय किस भाषा का प्रचार-प्रसार था–

(क) हिंदी का (ख) उर्दू का
(ग) अंग्रेजी का (घ) संस्कृत का।

2. आनंद भवन किसका केंद्र हो गया–

(क) संगीत-शिक्षा का
(ख) हिंदी के प्रचार-प्रसार का
(ग) स्वतंत्रता के संघर्ष का
(घ) क्रांतिकारी गतिविधियों का।

3. कवि-सम्मेलनों की अध्यक्षता कौन करता था–

(क) हरिऔध जी (ख) श्रीधर पाठक
(ग) रत्नाकर जी (घ) ये सभी।

4. महादेवी जी को प्रायः कौन-सा पुरस्कार मिलता था–

(क) प्रथम पुरस्कार (ख) द्वितीय पुरस्कार
(ग) तृतीय पुरस्कार (घ) सांत्वना पुरस्कार।

5. कवि-सम्मेलनों में लेखिका ने लगभग कितने पदक प्राप्त किए–

(क) पचास (ख) एक सौ
(ग) चालीस (घ) दो सौ।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(3) सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं। तब उनकी जगह एक मराठी लड़की ज़ेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रही। वह कोल्हापुर से आई थी। ज़ेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ़ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। ज़ेबुन मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं-ज़ीनत बेगम। ज़ेबुन जब 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर-लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी

जी से टोके बिना न रहा जाता था–'वाह! देसी कौवा, मराठी बोली!' ज़ेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौवा मराठी बोलता है।' ज़ेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाउज़ पहनती थी। कहती थी, 'हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!'

1. ज़ेबुन्निसा कौन-सी भाषा बोलती थी–

(क) मराठी (ख) बंगाली
(ग) पंजाबी (घ) गुजराती।

2. ज़ेबुन्निसा कहाँ से आई थी–

(क) जबलपुर से (ख) कोल्हापुर से
(ग) कानपुर से (घ) सहारनपुर से।

3. उस्तानी जी का क्या नाम था–

(क) ज़ीनत बेगम (ख) सलमा बेगम
(ग) करीना बेगम (घ) फातिमा बेगम।

4. ज़ेबुन्निसा कैसी हिंदी बोलती थी–

(क) साहित्यिक हिंदी
(ख) पूर्वी हिंदी
(ग) मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी
(घ) राजस्थानी हिंदी।

5. 'वाह! देसी कौवा, मराठी बोली!' यह बात ज़ेबुन को कौन कहता था–

(क) लेखिका (ख) उस्तानी
(ग) छात्रावास की लड़कियाँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(4) हम लोग तब अपने ज़ेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुःख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!'

1. लेखिका अपने ज़ेब-खर्च से देश के लिए हमेशा कितने पैसे बचाती थीं–

(क) चार-चार आने (ख) एक-एक, दो-दो आने
(ग) आठ-आठ आने (घ) एक-एक रुपया।

2. ज़ेब-खर्च से बचाए पैसे लेखिका किसे देती थीं–

(क) नेहरू जी को (ख) शास्त्री जी को
(ग) गांधी जी को (घ) तिलक जी को।

3. लेखिका जब बापू से मिलने गईं तो क्या लेकर गईं–

(क) फूलों का गुलदस्ता (ख) चाँदी का कटोरा
(ग) पैसों की थैली (घ) एक रेशमी चादर।

4. लेखिका को किस बात का दुख हुआ–

(क) गांधी जी ने उनका चाँदी का कटोरा ले लिया
(ख) गांधी जी ने उनके पैसे स्वीकार नहीं किए
(ग) गांधी जी ने यह नहीं पूछा कि कटोरा किस कविता पर मिला
(घ) लेखिका का कटोरा कहीं खो गया।

5. 'और जाओ दिखाने!' यह कथन किसका है–

(क) लेखिका का (ख) सुभद्रा जी का
(ग) बापू का (घ) प्रधानाचार्या का।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(5) बचपन का एक और भी संस्कार था कि हम जहाँ रहते थे, वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे बेचारे एक बंगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में हम लोग रहते थे। बेगम साहिबा कहती थीं–'हमको ताई कहो!' हम लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे हमारी माँ को चची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं, राखी के दिन बहनें राखी बाँध जाएँ, तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं–'भाई भूखा बैठा है, राखी बँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे। फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिता जी से कहा, 'देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े-वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को वे दुलहन कहती थीं। कहने लगीं, 'दुलहन, जिनके ताई-चाची नहीं होती हैं, वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छह महीने तक चाची-ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुंदर है। मैं अपनी तरफ़ से इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।'

1. लेखिका जहाँ रहती थीं, वहाँ और कौन रहता था–

(क) एक अध्यापक (ख) जवारा के नवाब
(ग) एक जमींदार (घ) एक अंग्रेज।

2. जवारा के नवाब किसमें रहते थे–

(क) महल में (ख) बंगले में
(ग) कोठी में (घ) एक छोटे से मकान में।

3. लेखिका बेगम साहिबा को क्या कहती थीं–

(क) खाला साहिबा (ख) ताई साहिबा
(ग) चाची साहिबा (घ) बेगम साहिबा।

4. बेगम साहिबा लेखिका के नवजात भाई के लिए क्या लाईं–

(क) खिलौने (ख) चाँदी के बरतन
(ग) कपड़े (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. बेगम साहिबा ने लेखिका के भाई का क्या नाम रखा–

(क) श्याम सुंदर (ख) देव मोहन
(ग) मनमोहन (घ) मदन मोहन।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'मेरे बचपन के दिन' पाठ की लेखिका हैं–

(क) मन्नू भंडारी (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान
(ग) महादेवी वर्मा (घ) इनमें कोई नहीं।

2. महादेवी वर्मा जी का जन्म किस सन् में हुआ था–

(क) 1900 (ख) 1905
(ग) 1907 (घ) 1910.

3. महादेवी वर्मा जी का जन्म किस प्रदेश में हुआ था–

(क) बिहार (ख) झारखंड
(ग) उत्तर प्रदेश (घ) मध्य प्रदेश।

4. लेखिका की कुल-देवी थी–

(क) दुर्गा (ख) सरस्वती
(ग) लक्ष्मी (घ) वैष्णो।

5. लेखिका को संस्कृत पढ़ाने कौन आए थे–

(क) मौलवी साहब (ख) पंडित जी

(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. लेखिका के बाबा उन्हें क्या बनाना चाहते थे–

(क) विदुषी (ख) अभिनेत्री

(ग) लेखिका (घ) अध्यापिका।

7. लेखिका ने उर्दू सिखाने वाले मौलवी को देखकर क्या किया–

(क) नमस्कार किया (ख) चारपाई के नीचे छिप गईं

(ग) रोने लगी (घ) घर से बाहर भाग गई।

8. लेखिका क्राथवेस्ट कॉलेज में कौन-से दर्जे में भर्ती हुई–

(क) पहले (ख) दूसरे

(ग) तीसरे (घ) पाँचवें।

9. छात्रावास के एक कमरे में कितनी छात्राएँ रहती थीं–

(क) एक ही (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार।

10. सुभद्रा कुमारी लेखिका से कितने साल सीनियर थी–

(क) दो (ख) चार

(ग) पाँच (घ) दस।

11. लेखिका की कविताएँ कौन-सी पत्रिका में छपती थीं–

(क) सरस्वती में (ख) स्त्री दर्पण में

(ग) मनोरमा में (घ) गृहशोभा में।

12. लेखिका को कविता पाठ करने पर क्या पुरस्कार मिला था–

(क) घड़ी (ख) मेडल

(ग) सर्टिफिकेट (घ) चाँदी का एक कटोरा।

13. सुभद्रा ने पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे में क्या खाने की माँग की–

(क) हलवा (ख) खीर

(ग) दाल-चावल (घ) दूध।

14. लेखिका के साथ छात्रावास के कमरे में रहने आई नई लड़की का नाम क्या था–

(क) सुभद्रा (ख) पूजा

(ग) प्रीति (घ) ज़ेबुन्निसा।

15. लेखिका को पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे का क्या हुआ–

(क) वह खो गया (ख) चोरी हो गया

(ग) बापू ने ले लिया (घ) लेखिका के पास ही रहा।

16. 'आनंद भवन' कहाँ है–

(क) लखनऊ में (ख) दिल्ली में

(ग) कानपुर में (घ) इलाहाबाद में।

17. जिस कंपाउंड में लेखिका रहती थी, वहाँ कहाँ के नवाब रहते थे–

(क) लखनऊ के (ख) जवारा के

(ग) अवध के (घ) हैदराबाद के।

18. प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा कौन थे–

(क) एक कवि (ख) एक लेखक

(ग) लेखिका के भाई (घ) इनमें से कोई नहीं।

19. लेखिका के छोटे भाई का नाम 'मनमोहन' किसने रखा था–

(क) लेखिका ने

(ख) लेखिका की माँ ने

(ग) लेखिका के पिता जी ने

(घ) लेखिका की ताई साहिबा ने।

20. प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी में क्या रहे–

(क) वाइस चांसलर (ख) प्रोफेसर

(ग) अध्यापक (घ) प्रिंसिपल।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (घ) **9.** (घ) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (घ) **13.** (ख) **14.** (घ) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ख) **18.** (ग) **19.** (घ) **20.** (क)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : महादेवी वर्मा से पहले उनके परिवार में लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार होता था? उनके बाबा ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर : महादेवी वर्मा के परिवार में उनके जन्म से पहले लड़कियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता था। कुछ लोग तो उन्हें जन्म लेते ही परमधाम भेज देते थे। पिछले 200 वर्षों से उनके परिवार में कोई लड़की नहीं थी। उनके बाबा ने कुलदेवी दुर्गा की आराधना की, तब महादेवी का जन्म हुआ। उनके बाबा उन्हें बहुत लाड़-प्यार करते थे और विदुषी बनाना चाहते थे।

प्रश्न 2 : महादेवी वर्मा को काव्य-प्रेरणा किससे मिली?

उत्तर : महादेवी वर्मा को काव्य-प्रेरणा संस्कारगत रूप में माँ से प्राप्त हुई थी। बाद में जब वे इलाहाबाद के क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज़ में उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए आईं, तब छात्रावास में उनकी भेंट वरिष्ठ सहपाठिन सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई। सुभद्रा जी के साथ रहने से उनकी काव्य के प्रति अभिरुचि और भी उद्दीप्त होती गई। उनका उत्साह बढ़ने लगा। वे कविताएँ लिखने लगीं व कवि-सम्मेलनों में भी जाने लगीं। उनकी रचनाएँ 'स्त्री-दर्पण' नामक पत्रिका में छपती थीं।

प्रश्न 3 : महादेवी वर्मा की काव्य-प्रतिभा निखारने में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : महादेवी वर्मा की काव्य-प्रतिभा निखारने में सुभद्रा कुमारी चौहान का बहुत योगदान था। जब उन्हें पता चला कि महादेवी वर्मा भी कविता लिखती हैं तो उन्होंने महादेवी की सारी किताबों की तलाशी ली। तलाशी लेने पर उन्हें उनकी लिखी बहुत-सी कविताएँ मिल गईं। वे महादेवी जी का हाथ पकड़कर सारे छात्रावास में सबको बताती फिरीं कि ये कविताएँ महादेवी ने लिखी हैं। इस प्रकार उन्होंने महादेवी जी का सारा संकोच दूर कर दिया। फिर वे दोनों साथ-साथ कविताएँ लिखने लगीं और उनकी कविताएँ 'स्त्री-दर्पण' पत्रिका में छपने लगीं। सुभद्रा जी उन्हें कवि-सम्मेलनों में भी ले जाने लगीं।

प्रश्न 4 : स्वतंत्रता-आंदोलन को गति प्रदान करने में कवि-सम्मेलनों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : सन् 1917 के आस-पास स्वतंत्रता-आंदोलन ने ज़ोर पकड़ लिया था। देश को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए एक भाषा, स्वभाषा तथा राष्ट्रभाषा की बातें होने लगी थीं। राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार कांग्रेस कर रही थी। इसी के अंतर्गत कवि-सम्मेलनों का आयोजन किया जाने लगा था, जिनमें हरिऔध, श्रीधर पाठक, रत्नाकर जी जैसे वरिष्ठ राष्ट्रीय कवि अध्यक्षता किया करते थे। हिंदी और स्वदेश के प्रति प्रेम जगाने में इन कवि-सम्मेलनों का अविस्मरणीय योगदान रहा।

प्रश्न 5 : महादेवी वर्मा के जन्म के समय लड़कियों की दशा कैसी थी? आज उसमें क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर : महादेवी वर्मा के जन्म के समय लड़कियों की दशा अच्छी नहीं थी। उनका जन्म लेना अशुभ माना जाता था। कुछ लोग तो उन्हें जन्म लेते ही मार डालते थे। उनका पालन-पोषण लड़कों की अपेक्षा बहुत निम्न स्तर से किया जाता था।

आज परिस्थिति ऐसी नहीं है। आज लड़कियों के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं। उनका पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा लड़कों के समान की जाती है। किसी भी क्षेत्र में लड़कियाँ आज लड़कों से पीछे नहीं हैं।

प्रश्न 6 : महादेवी वर्मा उर्दू-फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाईं?

उत्तर : लेखिका के पिता अंग्रेज़ी जानते थे व बाबा उर्दू-फ़ारसी। माँ हिंदी की जानकार थीं। लेखिका के सामने तीनों भाषाओं के विकल्प थे। बाबा उन्हें विदुषी बनाना चाहते थे। दूसरी ओर लेखिका को उर्दू-फ़ारसी में ज़रा भी रुचि नहीं थी, अतः जब मौलवी साहब उर्दू पढ़ाने उनके घर आते तो वे चारपाई के नीचे छिप जातीं। इस प्रकार लेखिका उर्दू-फ़ारसी नहीं सीख पाईं।

प्रश्न 7 : लेखिका ने अपनी माँ की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर : लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी ज्ञान तथा गायन-वादन में रुचि का उल्लेख किया है। वे हिंदी तथा संस्कृत की ज्ञाता थीं। इसलिए महादेवी पर दोनों भाषाओं का संस्कारगत प्रभाव पड़ा। महादेवी की माता धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे सुबह-सवेरे व संध्या समय पूजा-पाठ करतीं। वे सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' प्रभाती गाती थीं एवं सायंकाल मीरा के पद गाती थीं। वे भक्ति-गीत लिखती भी थीं।

प्रश्न 8 : जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंध को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?

उत्तर : जवारा के नवाब के परिवार के साथ महादेवी वर्मा के पारिवारिक संबंध सगे-संबंधियों से भी बढ़कर थे। जवारा के नवाब की बेगम ने ही महादेवी के छोटे भाई का नाम 'मनमोहन' रखा था। वे हर त्योहार या खुशी के मौके पर उन लोगों के साथ घुल-मिल जाती थीं। ऐसे आत्मीयता-भरे संबंधों की, उस पर भी विजातीय संबंधों की आज के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती। आजकल का माहौल कुछ इस प्रकार का हो गया है कि हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं और ज़रा-सी बात पर खून-खराबा करने को उतारु हो जाते हैं। इसलिए जवारा के नवाब के साथ अपने परिवार के संबंधों को आज के संदर्भ में लेखिका ने 'स्वप्न' जैसा कहा है।

प्रश्न 9 : 'बेगम साहिबा के मन में हिंदू-मुसलमान का भेदभाव नहीं था।' इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

उत्तर : 'बेगम साहिबा के मन में हिंदू-मुसलमान का भेदभाव नहीं था।' यह कथन बेगम साहिबा के व्यवहार को देखते हुए पूर्णतः सत्य सिद्ध होता है। मुस्लिम होते हुए भी उन्होंने एक हिंदू परिवार अर्थात् महादेवी वर्मा के परिवार से संबंध जोड़े। वे मुस्लिम पर्व मुहर्रम को जिस निष्ठा और समर्पण के साथ मनाती थीं, उसी निष्ठा और समर्पण के साथ वे हिंदू पर्व रक्षाबंधन आदि को भी मनाती थीं। उन्होंने महादेवी के भाई का नाम 'मनमोहन' भारतीय हिंदू संस्कृति के अनुरूप ही रखा, कोई मुस्लिम नाम नहीं सुझाया–ये सभी उनकी हिंदू-मुसलमान भेदभावहीनता के अकाट्य प्रमाण हैं।

प्रश्न 10 : ज़ेबुन कौन थी?" हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे।" उसके इस कथन से उसके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

उत्तर : ज़ेबुन का पूरा नाम था–ज़ेबुन्निसा। वह एक सीधी-सादी मराठी मुसलमान कन्या थी। उसके "हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!" कथन में उसका स्वभाषा-प्रेम, मातृभूमि-प्रेम तथा स्वाभिमान झलकता है। वह विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच रहकर भी किसी हीनभावना से ग्रस्त नहीं थी, वरन् उसमें अपनी भाषा को बोलने के प्रति आत्मगौरव की भावना थी। उसका यही आत्मगौरव उसका संबल और आत्मविश्वास था, जो निश्चय ही अनुकरणीय है।

प्रश्न 11 : परिवार में हिंदी का वातावरण न होने पर भी महादेवी की रुचि हिंदी में कैसे हो गई?

उत्तर : परिवार में हिंदी का वातावरण न होने पर भी महादेवी की हिंदी के प्रति रुचि का कारण था उनकी माँ का संस्कृत के प्रति लगाव। उनकी माँ हिंदीभाषी थीं। उन्होंने महादेवी को सबसे पहले पंचतंत्र पढ़ाया, इससे उनकी संस्कृत में रुचि बढ़ती गई।

प्रश्न 12 : क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज़ में महादेवी का मन क्यों लग गया?

उत्तर : क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज़ में महादेवी का मन इसलिए लग गया: क्योंकि वहाँ का वातावरण अत्यंत समरसतापूर्ण था। धर्म के नाम पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। मेस में शुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था थी, खाना बिना प्याज़ का बनता था।

प्रश्न 13 : अच्छे मित्रों का साथ व्यक्ति के जीवन की दिशा निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, 'मेरे बचपन के दिन' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : अच्छे मित्रों का साथ व्यक्ति के जीवन की दिशा निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह बात महादेवी वर्मा के उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है। महादेवी को छात्रावास में सबसे पहले सुभद्रा कुमारी चौहान का साथ मिला। सुभद्रा कुमारी हिंदी कविता लिखा करती थीं, जिससे महादेवी वर्मा को प्रेरणा मिली और उनकी तुकबंदी परिपक्व कविता में परिवर्तित हो गई। ज़ेबुन्निसा के साथ ने ही उनके कवि-कर्म को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार मित्रों का प्रोत्साहन पाकर महादेवी प्रतिष्ठित कवयित्री बन गईं।

प्रश्न 14 : अपना चाँदी का कटोरा बापू को देते समय महादेवी को किस बात का दुःख हुआ?

उत्तर : अपना चाँदी का कटोरा बापू को देते समय महादेवी को इस बात का दुःख हुआ कि जिस कविता के लिए महादेवी को वह कटोरा देकर सम्मानित किया गया था, बापू ने उस कविता के विषय में उनसे कुछ नहीं पूछा और न ही वह कविता सुनाने का आग्रह उनसे किया।

प्रश्न 15 : प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा के जम्मू यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर बनने का उल्लेख महादेवी वर्मा ने किस उद्देश्य से किया?

उत्तर : प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा महादेवी वर्मा के छोटे भाई थे और उसका यह नामकरण उनकी मुस्लिम 'ताई साहिबा' ने किया था और उनके स्नेह को महत्त्व देते हुए महादेवी के परिवार ने उसी नाम पर अपनी मुहर लगा दी। 'ताई साहिबा' के इस सौहार्द को दर्शाने के उद्देश्य से ही प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा के जम्मू यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर बनने का उल्लेख महादेवी वर्मा ने किया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–*

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा, जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरी माता जबलपुर से आईं, तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

1. **लेखिका की कुल-देवी थी–**
   (क) दुर्गा (ख) सरस्वती
   (ग) लक्ष्मी (घ) वैष्णो।
2. **लेखिका को पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे का क्या हुआ–**
   (क) वह खो गया
   (ख) चोरी हो गया
   (ग) बापू ने ले लिया
   (घ) लेखिका के पास ही रहा।
3. **लेखिका के बाबा ने किस देवी की पूजा की थी–**
   (क) दुर्गा की (ख) लक्ष्मी की
   (ग) सरस्वती की (घ) गौरी की।
4. **लेखिका के परिवार में भाषा की दृष्टि से कैसा वातावरण था–**
   (क) लेखिका के बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे
   (ख) उनके पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी
   (ग) उनके घर में हिंदी का वातावरण नहीं था
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **लेखिका की माँ के विषय में सत्य नहीं है–**
   (क) वे जबलपुर से आई थीं
   (ख) वे अपने साथ हिंदी लाई थीं
   (ग) वे पूजा-पाठ नहीं करती थीं
   (घ) वे पूजा-पाठ भी करती थीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **लेखिका की कुल-देवी थी–**
   (क) दुर्गा (ख) सरस्वती
   (ग) लक्ष्मी (घ) वैष्णो।
7. **लेखिका को पुरस्कार में मिले चाँदी के कटोरे का क्या हुआ–**
   (क) वह खो गया
   (ख) चोरी हो गया
   (ग) बापू ने ले लिया
   (घ) लेखिका के पास ही रहा।
8. **प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा कौन थे–**
   (क) एक कवि (ख) एक लेखक
   (ग) लेखिका के भाई (घ) इनमें से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **महादेवी वर्मा की काव्य-प्रतिभा निखारने में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान पर प्रकाश डालिए।**
10. **महादेवी वर्मा के जन्म के समय लड़कियों की दशा कैसी थी? आज उसमें क्या परिवर्तन आया है?**
11. **जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंध को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?**
12. **परिवार में हिंदी का वातावरण न होने पर भी महादेवी की रुचि हिंदी में कैसे हो गई?**